शौर्यगाथाएँ

Vol.2

# वीर भृगुनंदन

सत्य घटनाओं पर आधारित

# कीर्ति चक्र

कीर्ति चक्र शांति काल में दिया जाने वाला वीरता का द्वितीय सर्वोच्च पदक है, जो युद्ध काल में वीरता की अद्वितीय मिसाल कायम करने के लिए दिये जाने वाले महावीर चक्र के समकक्ष है । वरिष्ठता के क्रम में यह अशोक चक्र के बाद एवं शौर्य चक्र से ऊपर है ।

देश की आंतरिक सुरक्षा, देशहित एवं देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर सिपाहियों और नागरिकों को यह सम्मान भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपने हाथों प्रदान किया जाता है ।

यह गोलाकार एवं मानक चांदी से निर्मित होता है। इसका व्यास एक, तीन एवं आठ इंच होता है। इस पदक के बीच में अशोक चक्र की प्रतिकृति उभरी होती है जो कमल की माला से घिरी होती है। इसके दूसरी ओर हिंदी और अंग्रेजी में कीर्ति चक्र उभरा होता है जो कमल के दो फूलों द्वारा पृथक किया हुआ होता है।

के.रि.पु.बल

शौर्यगाथाएँ

# भृगुनंदन चौधरी

## कीर्ति चक्र

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः विकास सेठी
आलेखः अनिल
चित्रांकनः सुर्बोज्योति भट्टाचार्य
कवरः राज चौधरी
रंगकारः देबोलीना चक्रवर्ती
शब्दांकनः आनन्द द्विवेदी

Published by Pixel2Pixel on behalf of Directorate General, CRPF

Pixel2Pixel
259, 3rd Floor, Hauz Rani,
Opp Max Hospital, Saket,
New Delhi - 110017

www.pixel2pixel.in
info@pixel2pixel.in

Copyright © 2015 Central Reserve Police Force

Printed by Printland Digital (I) Pvt. Ltd. in November, 2015

All right reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher. For permission requests, write to the publisher, addressed "Attention: Permissions Coordinator," at the address below:

**Inspector General (Operations)**

Central Reserve Police Force

Email: igops@crpf.gov.in

भृगुनंदन जिसे सभी लोग भिक्खू नाम से पुकारते थे, जवानी के जोश में अपनी मित्र मंडली के साथ भरी दोपहर में अपने गाँव सिढ़ौली के स्कूल के मैदान में क्रिकेट खेलने में व्यस्त था।

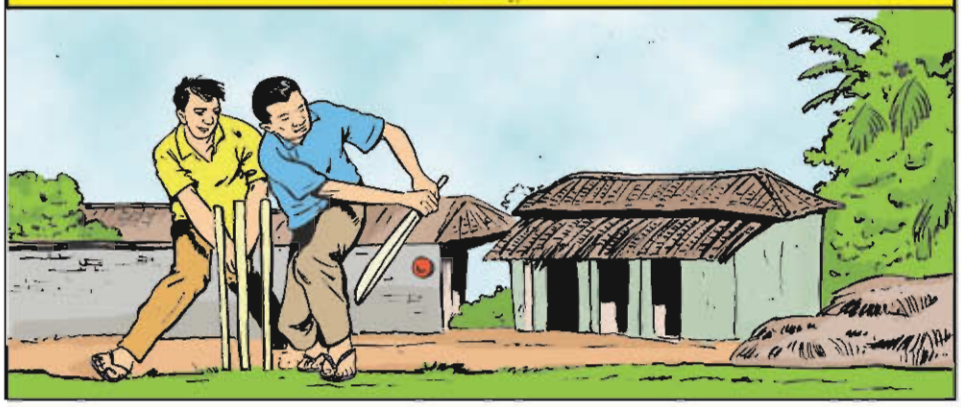

तभी एक लड़का दौड़ता हुआ वहां आया।

भिक्खू ने आव देखा न ताव, क्रिकेट बैट वहीं फेंक कर तालाब की ओर दौड़ लगाई, और तुरंत तालाब में छलांग लगा दी, और उस डूबते हुये बच्चे को बाहर खींच लाया।

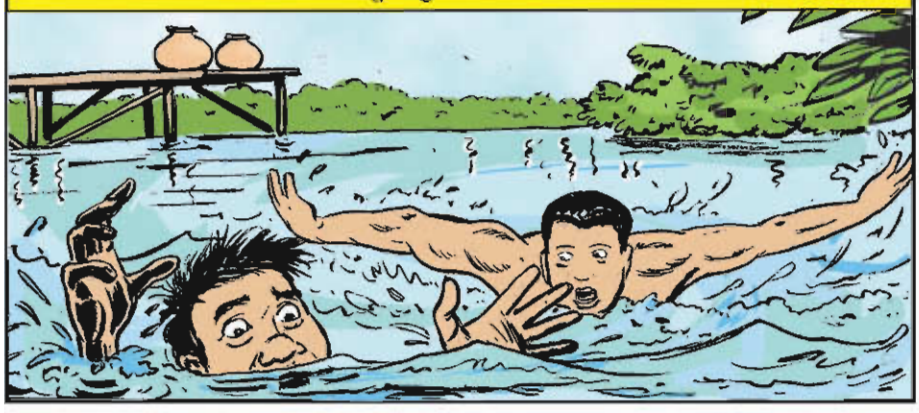

इधर लोग भिक्खू की प्रशंसा में तालियाँ पीट रहे थे, उधर भिक्खू की छोटी बहन तेजस्वी दौड़ कर घर गई और माँ सुशीला से भिक्खू की चुगली कर दी।

ये लो, बेटा तालाब में कूद गया और ये कह रहे हैं कि आ जायेगा।..... सुन लो जी, आज आप बीच में मत पड़ना, आएगा तो खाल खींच लूंगी उसकी।

ठीक है, तुम्हारा ही लाड़ला है। जो चाहे करो।

तभी मिक्खू भीगा हुआ दरवाजे पर आकर खड़ा हो जाता है।
अम्मा, भईया आ गये।

क्यों रे, क्यों जान हलकान किये है?
अम्मा बताओ तो क्या किया है मैंने?

पूछता है क्या किया है; अरे अगर डूब जाता उस मनहूस तालाब में, तो..... जानता नहीं कितने बच्चे और जानवर डूब कर मर चुके हैं उस तालाब में।

अम्मा मैं नहीं कूदता तो वो बच्चा मर जाता। कोई उसे बचाने के लिए नहीं कूद रहा था।

अरे तो तुझे क्या जरूरत थी कूदने की? सारी दुनिया को बचाने का ठेका तूने ही लिया है क्या? अगर तुझे कुछ हो जाता तो?

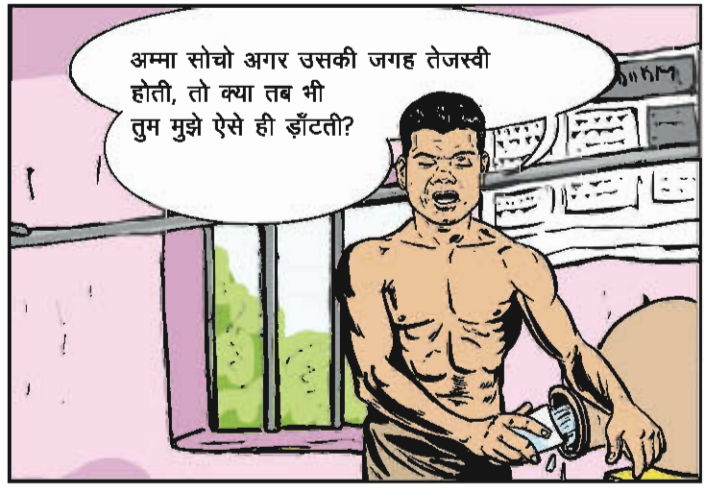
अम्मा सोचो अगर उसकी जगह तेजस्वी होती, तो क्या तब भी तुम मुझे ऐसे ही डाँटती?

अरे चुप कर! बड़ा आया बड़बड़ करने वाला, अब जा के कपड़े बदल ले, नहीं तो सर्दी लग जाएगी।

भिक्खू अन्दर चला जाता है।

डाँट लिया अपने लाड़ले को, पड़ गई कलेजे में ठंड़क?

आप तो रहने दो, सारी संताने आप पर ही गये हैं, अपनी चिंता छोड़ कर सारे जमाने की चिंता है बाप बेटों को। चल तेजस्वी, खाना खिला दूं तुझे ।

सी.आर.पी.एफ. 205 कोबरा बटालियन की अपनी बैरक में बैठा भृगुनंदन इस घटना को याद कर मुस्कुरा रहा है कि उसका दोस्त सिपाही दिलीप वहां आता है।

अरे भृगु तू यहां बैठा है, मैं तुझे नीचे देख रहा था। मैस में नहीं चलना है क्या? क्या सोच रहा है?

कुछ नहीं, घर के बारे में। अम्मा की बातें याद आ रही थी।..... तू चल मैं आता हूँ।

जल्दी से, याद है न, आज एक आपरेशन पर जाना है, बहुत बड़ा आपरेशन है, सुना है करीब 150 नक्सली जमा हैं चकरबंधा के जंगलों में।

हाँ, मालूम है।

इसीलिए कह रहा हूँ, खाना खाकर थोड़ा सो ले, रात दो बजे निकलना है, पता नहीं फिर कब नींद नसीब होगी।

मालूम है यार, हम पहली बार तो नहीं जा रहे हैं, चार दिनों के आपरेशन पर। तू जा, मैं आता हूँ।

दिलीप के जाने के बाद भृगु अपने मोबाईल पर एक नंबर मिलाने लगता है।

दूसरी तरफ फोन नरहर उठाता है।
हैल्लो।

प्रणाम बापू, हम भिक्खू बोल रहे हैं।
प्रणाम प्रणाम, घर कब आ रहे हो बिटवा?

हमें आना था बापू, पर लगता है, अभी नहीं आ पाएंगे, अगले महीने प्रोग्राम बनाते हैं।

ठीक है, तुम्हारे मामा कह रहे थे, एक बार फिर जाएंगे बस्तर, अबकि मना लेंगें उन लोगों को जल्दी ब्याह के लिए।

काहे बापू, काहे जल्दी कर रहे हो, वो कह रहे हैं अगले साल, तो रहने दीजिए न। अगले साल देखेंगे।

तो ठीक है बिटवा, मगर तुम्हारी अम्मा बहुत जल्दी कर रही है।

अम्मा की कौन गाड़ी छूट रही है, उन्हें कहिए न, थोड़ा धीरज रखें।

हमने तो बहुत कह लिया बिटवा, लो तुम्हीं कह दो।
तो लाओ न, कह देते हैं, कहां है अम्मा?

अरे भिक्खू की अम्मा..... भिक्खू का फोन है।

सुशीला अन्दर से आकर फोन लेती है।
अरे भिक्खू..... कैसा है बिटवा।

प्रणाम अम्मा। मैं ठीक हूँ, आप ठीक हैं न ?

प्रणाम प्रणाम, जीते रहो। भगवान खूब लंबी उम्र दे।

अम्मा बापू कह रहे थे कि आप बहुत परेशान हैं, चिंता करती हैं।

अरे उनकी तो आदत है बक–बक करने की, तू परेशान न हो, मैं ठीक हूं। तू आ रहा है न बिटवा।

अम्मा, अभी तो नहीं, लेकिन अगले महीने आऊँगा।..... और सुनो अम्मा, इसलिए फोन किया, शायद अगले दो–चार दिन फोन न कर पाऊँ, बाहर जा रहा हूँ, एक आपरेशन पर।

अच्छा बिटवा, अपना ख्याल रखना, हैल्लो.... हैल्लो.....

ये तो बोलता ही नहीं।
नेटवर्क चला गया है। ई नेटवर्क का अच्छा समस्या है यहां पर।

राम जाने क्या कह रहा था बिटवा।

इधर मां सुशीला भृगु से बात ना हो पाने की वजह से परेशान थी, उधर भृगु बैरक में फोन हाथ में लिए बैठा कुछ सोच रहा है कि दिलीप फिर आता है।
अरे भृगु, तू अभी तक यहीं बैठा है, हो गई मां से बात?

हां हो गई। थोड़ी बहुत..... फिर नेटवर्क चला गया।

क्या कह रही थी?
कहना क्या है, कहती है ब्याह कर लो।

लड़की देखी है?
घर वालों ने देखी है। हमारा जिला गरियाबंद है और उसका बस्तर।

घर वालों की छोड़, तूने देखी है?

हाँ, इस बार डाक लेकर जगदलपुर गया था, तब देखी थी, वहीं कालेज में पढ़ती है।

क्या बात है ? फिर तो बात भी हुई होगी।
हाँ।

घर वालों को मालूम है ?
नहीं। हम लोगों के यहां शादी से पहले मिलने का रिवाज नहीं है।

तो अबकी छुट्टी में शादी?

नहीं, उसके घर वाले चाहते हैं कि शादी अगले साल हो, उसकी पढ़ाई पूरी होने के बाद।.....मेरी छोड़, तू अपनी बता, तू कब करेगा शादी?

चार बहनों का इकलौता भाई हूँ, डैडी रिटायर्ड ।.... तो भैया अपना तो अभी कोई प्रोग्राम नहीं है.... चल देर हो रही है..... फिर ब्रीफिंग के लिए भी जाना है।

दोनों उठ कर बाहर निकल जाते हैं।

205 कोबरा बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी श्री महेन्द्र कुमार अपने सामने बैठे कमांडरों को ब्रीफ कर रहें हैं। कमांडरों में टी. के. लाल, शिंकु शरण, नीरज कुमार और दूसरे कई कमांडर शामिल हैं। कमांडरों के पीछे उनकी टीनों के जवान बैठें हैं, जिनमें मृगुनंदन, दिलीप, मनोज, अनन, धीरज और सुरेंद्र सभी शामिल हैं।

डी.आई.जी. पटना रेंज से खबर मिली है कि कुछ बड़े नक्सली नेता गया और औरंगाबाद की सीमा पर चकरबंधा के जंगलों में एक मीटिंग करने वाले हैं।

इस मीटिंग में 150 के करीब नक्सली भाग लेंगे। हमारे इस आपरेशन का मकसद है, नक्सलियों के इस कैम्प को घेर कर बरबाद करना।

जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं, ये इतना आसान नहीं होगा क्योंकि नक्सली भारी हथियारों और गोला–बारूद से लैस होंगे।

और उस पूरे इलाके में बारूदी सुरंगें बिछी होने का भी अनुमान है। इस लिए बहुत सावधानी की जरूरत है।

अभी इस आपरेशन को 4 दिनों के लिए प्लान किया गया है, यानी कल 7 सितम्बर से 10 सितम्बर 2012 तक। आगे हालात के मुताबिक निर्णय लिया जाएगा।

इसलिए सभी लोग, इसी के मुताबिक अपना अम्युनिशन और ड्राई राशन ले लेंगे।

ये एक बड़ा आपरेशन है, इसमें 203 और 205 कोबरा, 47, 153, 159, और 215 बटालियनों की टीमों के साथ एस.टी.एफ. और पुलिस के लोग भी होंगे।

इसलिए सभी का आपस में तालमेल बहुत जरूरी है। सभी कमांडरों को टारगेट लोकेशन के ग्रिड रेफरेंस दे दिए गये हैं। उन्हें अपने जी.पी.एस. में फीड कर लें। इस पूरे आपरेशन की कमांड मेरे पास रहेगी।

किसी को कोई शक?

नो....सर।

तो ठीक है। कल सुबह 2 बजे मार्च करेंगे। ओ.के., ऑल द बेस्ट।

जय हिंद सर।

उसी दिन आधी रात के बाद सी.आर.पी.एफ. की यह पार्टी नक्सलियों के विरुद्ध एक बड़े आपरेशन को अंजाम देने के लिए कैम्प से निकल जाती है।

इस पार्टी के एक दल में शामिल थे सिपाही भृगुनंदन और सिपाही दिलीप सिंह।

अगले दिन टीम जब कुछ विश्राम के लिए रुकी तो भृगु और दिलीप सबसे छिटक कर एक पेड़ के नीचे आ बैठे।

पूरी रात, आधा दिन बीत गया, पता नहीं, ये नक्सली कहां छुप कर बैठें हैं?

होंगे कहां, यहीं कहीं किसी टेकरी के पीछे घात लगाकर बैठे होंगे, हमारे इंतजार में।

इतने ही बहादुर हैं तो सामने क्यों नहीं आते, हिम्मत है तो सामने आकर मुकाबला करें।

वो हमारी तुम्हारी तरह वर्दी वाले नहीं हैं, जो सामने से आयें।

बहुत गुस्सा आता है मुझे इन पर। जी चाहता है एक–एक को भून कर रख दूं।

बहुत गुस्से में हो।

क्यों कर रहें हैं नक्सली यह सब? क्या मिलेगा इन्हें गरीब गांव वालों और पुलिस वालों को मार कर।

अब की बार किसी नक्सली को पकड़ेगा तो पूछ लेना।

तभी एक जोर का धमाका होता है और गोलियाँ चलने की आवाज आने लगती है।

ये तो किसी आई. ई. डी. का विस्फोट लगता है।

नक्सलियों ने सारे जंगल में बारूदी सुरंगे बिछा रखी हैं।

लगता है हमारी ही किसी पार्टी पर अम्बुश हुआ है, या फिर किसी पार्टी का सामना हो गया है नक्सलियों के साथ।

चल ओ.सी. साहब बुला रहें हैं।

तुरंत सप कमांडेंट टी. के. लाल ने पूरी टीम नम्बर दो और टीम नम्बर तीन को इकट्ठा कर ब्रीफ किया।

अभी अभी खबर मिली है कि सहायक कमांडेंट शिंकु शरण की टीम नंबर 10 और द्वितीय कमान अधिकारी महेंद्र कुमार सर की टीम नम्बर 12 पर अटैक हुआ है। हमें उनकी मदद के लिए फौरन पहुंचना है। नीरज तुम अपनी टीम के साथ इस टेकरी से नीचे की तरफ उतरो, मैं पीछे की तरफ से आगे बढ़ता हूं।

सर, क्या हमारा एक साथ जाना ठीक नहीं होगा?

पता नही नक्सली किस जगह छिपे हों, दो हिस्सों में जाने पर जरूरत पड़ने पर हम एक–दूसरे की मदद कर सकेंगे। फिर हमारे पास सेट तो है ही। टीम नंबर 10 और 12 की लोकेशन अपने जी. पी.एस पर मार्क कर लो।

ओ.के. सर।

ओ.के. ऑल द बेस्ट। मूव।

और इसी के साथ सहायक कमांडेंट नीरज कुमार और उप कमांडेंट टी. के. लाल अपनी अपनी टुकड़ियों के साथ अलग–अलग दिशाओं में आगे बढ़ जाते हैं।

धीरे धीरे सावधानी के साथ सहायक कमांडेंट नीरज कुमार की टीम टेकरी से नीचे उतरने लगी।

सबसे आगे भृगुनंदन और दिलीप सिंह, उसके पीछे नीरज कुमार और उनके दो प्रोटेक्शन, मनोज और अगन और उनके पीछे एक जवान एल.एम.जी. के साथ और सबसे पीछे कुछ दूरी पर इंस्पेक्टर राम अवतार मीणा और उसके साथी थे।

पहाड़ी के नीचे से रुक–रुक कर गोलियों की आवाज आ रही थी।

सर नीचे से फायर की आवाज आ रही है।

हो सकता है हमारी टीम नंबर 10 और 12 पर जो अम्बुश हुआ है, ये आवाज वहीं से आ रही हो।

सर नक्सली भी हो सकते हैं पहाड़ी के नीचे।

हां, मगर हमारी कोई पार्टी भी हो सकती है, इसलिए सम्भल कर ।

फिर एक जोर से धमाके की आवाज होती है।

धड़ाम

सर फिर कोई आई.ई.डी. बम फटा है।

एक–एक कदम सम्भाल कर रखो, लगता है नक्सलियों ने पूरे इलाके में बारूदी सुंरगों का जाल बिछा रखा है।

पूरी पार्टी सावधानी से पहाड़ी से नीचे उतर आती है।

सामने एक नाला है।

सर अब क्या करेंगे?

कितना पानी होगा नाले में?

सर घुटनों से ज्यादा नहीं है।
जी.पी.एस. के मुताबिक हम टीम नंबर 10 और 12 से सिर्फ 450 गज के फासले पर हैं। हम नाला पार करके नाले के साथ–साथ आगे बढ़ेंगे।
और अगर बीच में फायर आ गया तो?
इंस्पेक्टर राम अवतार मीणा यहीं नाले के इस पार रुक कर हमें कवर करेंगे।
तो चलें सर ।
चलो।

और उसके बाद सहायक कमांडेंट नीरज कुमार, भृगुनंदन, दिलीप, मनोज और अमन एक के पीछे एक सावधानी से घुटने–घुटने पानी में उतर कर नाले को पार कर गये।

नाला पार करने के बाद पूरी टीम झाड़ियों और पेड़ों की आड़ लेती हुई नाले के साथ–साथ धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगी ।

इस पार्टी से करीब 100 गज की दूरी पर आगे नक्सलियों का एक कैम्प था जिसके दो मोर्चे इसी ओर थे। एक नक्सली हाथ में एस.एल.आर. लिए सावधानी से उसी रास्ते की ओर बने मोर्चे में पहरे पर था, जिस तरफ से सी. आर. पी. एफ. की पार्टी आगे बढ़ रही थी।

सबसे पहले उस नक्सली पर नजर पड़ी दिलीप की। उसने तुरंत भृगु और पार्टी को सावधान कर दिया।

उसने अपने कमांडर नीरज को भी इशारा किया, और पूरी पार्टी ने तुरंत जमीन पर लेट कर पोजीशन ले ली।

पार्टी की आहट से वह नक्सली सतर्क हो गया। उसने मोर्चे मे खड़े अपने साथी को इशारा किया। इस पर दो और नक्सली उसके पास आ गये। तीनों आस–पास के इलाके को नज़रों से छानने लगे।

तीनों नक्सली सावधानी से टीम की तरफ बढ़ने लगते हैं।

भृगु, दिलीप और नीरज आगे बढ़ते नक्सालियों पर फायर खोल देते हैं।

नक्सली भी तुरंत सम्भल कर फायर का जबाब देते हुए वापस जाने के लिए पलट जाते हैं।

नक्सलियों द्वारा चलाई गई एक गोली दिलीप के दाहिने कंधे और कोहिनी के बीच बाजू के मांस को चीरती हुई निकल जाती है। दिलीप दाँत भींच कर अपना दर्द दबाता है।

भृगु और नीरज फिर फायर करते हैं। इस फायर से पलट कर भागते दो नक्सली वहीं गिर जाते हैं।

तीसरा नक्सली जमीन पर गिरे अपने साथी को उठाना चाहता है, मगर भृगु और नीरज के फायर से खुद को बचाता हुआ वहां से निकलता है।

हाथ में पकड़ी अपनी रायफल को चूम लेता है।

वह नक्सली तुरंत अपने मोर्चे की तरफ भाग जाता है।

भृगु, नक्सली कैम्प की तरफ जैसे ही आगे बढ़ने लगता है वह नक्सली आई. ई. डी. बम का कनेक्शन जोड़ देता है।

ऐन भृगुनंदन के सामने एक जोरदार विस्फोट होता है।

और जब धमाके का गुब्बार छंटता है, तो भृगु देखता है कि उसके बाएँ पैर के चिथड़े उड़ गये हैं और दाहिनी टाँग घुटने के नीचे टूट कर लटक गई है।

वह अपनी रायफल सम्भाल कर पीछे दिलीप की तरफ देखता है।

दिलीप सरक कर भृगु के पास आता है। उसकी दाहिनी बाजू कोहिनी के नीचे टूट कर लटक गई है।

हाँ मैं ठीक हूँ, मगर
यार मुझे कमर के नीचे कुछ
महसूस नहीं हो रहा है।
क्या हुआ ?

मेरे दोनो
पैर गये यार।
ज्यादा
लगी है क्या ?

ज्यादा नहीं, बहुत ज्यादा लगी है।
पर शुक्र है हाथ ठीक है दोनों।.....
सर, सर को देख पीछे।

दोनों पलट कर पीछे देखते हैं।

नीरज का दाहिना हिस्सा चेहरे से लेकर पूरे शरीर तक झुलस गया है। चेहरे से बुरी तरह खून बह रहा है। उनके पास ही सिपाही अगन और मनोज खुद को सम्भालने की कोशिश कर रहें हैं।
सर को बहुत
चोट आई है।
अमन, मनोज,
सर ठीक हैं न।

तभी नीरज खुद को सम्भाल कर सब को शांत रहने का इशारा करता है।
सेट, सेट
दो मेरा।

मनोज नीरज को बगल में छिटक गया सेट उठा कर देता है।
अल्फा 03 कालिंग अल्फा 07,
अल्फा 03 कालिंग अल्फा 10, अल्फा
03 कालिंग अल्फा 12.....
कोई है?

सेट पर कोई जबाब नहीं मिलता।
किसी से कोई
कान्टेक्ट नहीं हो पा रहा है।
भृगुनंदन तुम ठीक हो ?

और दिलीप तुम, तुम ठीक हो ?
सर मेरी दोनों टांगों में चोट लगी है, लगता है खड़ा नहीं हो पाऊँगा।

सर, मेरा सीधा हाथ टूट गया है, रायफल पकड़ना मुश्किल है। पर कोई बात नहीं सर मैं अकेले बाँये हाथ से भी फायर कर सकता हूँ।

मेरे दोनों हाथ ठीक हैं सर, मैं भी फायर कर सकता हूं।... सर आप ठीक हैं ?

मेरे चेहरे पर चोट लगी है। आंखों में खून भर गया है। सब धुंधला सा दिख रहा है। किसी से कान्टेक्ट नहीं हो पा रहा है। हम लोग पीछे लौटेंगे। टेकरी पर जाकर सुरक्षित जगह लेंगे। थोड़ी देर में अंधेरा हो जाएगा, फिर यहां से निकलना मुश्किल होगा।

सर भृगु के लिए चलना मुश्किल है। आप को भी काफी चोट आयी है। अमन और मनोज हम तीनों को साथ लेकर पहाड़ी पर नहीं चढ़ सकते।

सर आप अमन और मनोज को लेकर जाइये और जितनी जल्दी हो सके हमारे लिये मदद भेजिये।

नहीं हम सब साथ लौटेगें।

सर हम पीछे लौटे तो दुश्मन हमारा पीछा कर हमें बरबाद कर देगा।

और कोई उपाय नहीं है, इतना रिस्क तो लेना पड़ेगा। तुम दिलीप के कंधे का सहारा लेकर चल सकते हो। मनोज भी तुम्हारी मदद करेगा।

सर मैं बिल्कुल चल नहीं पाऊँगा, मेरी वजह से सब मारे जायेंगे। आप जाइये सर।

हाँ सर आप जाइये, आप की हालत ठीक नहीं है। तुरंत पिछली पार्टी को मदद के लिए भेजिये। आप खुद कह रहे हैं कि आप की आंखे धुंधला रहीं हैं।

हमारी चिंता मत कीजिए सर, हम इन लोगों को यहीं रोक लेंगे..... क्यों दिलीप ?

तभी नीरज को बेहोशी छाने लगती है।

हाँ सर, इनके लिए मेरा बायाँ हाथ ही काफी है।

सर तो बेहोश हो रहे हैं.....सर.....सर....

मनोज, अमन जल्दी से सर को ले जाओ और हमारे लिये मदद भेजो। जाओ।

सिपाही मनोज और अमन लगभग अचेत होते नीरज को कंधों का सहारा देकर वहां से निकल जाते हैं।

गये?

हाँ, तेरे पास फर्स्ट एड है न ? पट्टी बांध ले खून रूक जायेगा।

ला पहले तेरे हाथ पर बाँध देता हूँ, बहुत खून निकल रहा है।

अपने गले मे पड़ा अंगोछा निकाल कर दिलीप की कलाई पर बाँध देता है।

और फिर अपने बेकार हो चुके पाँव और टांग की तरफ देखता है और दिलीप की मदद से उस पर पट्टी बांधने की कोशिश करता है। दिलीप अपने एक हाथ से उसकी मदद करता है। इस कोशिश में दोनो थक कर निढ़ाल हो जाते हैं।
दिलीप।

बोल यार।

यार हमारी तो दोनों की ही शादी नहीं हुई।
तो क्या हुआ?

अब कौन लड़की करेगी शादी हमसे? मेरे पैर नहीं हैं, और तेरा एक हाथ।

अरे तो ये कौन से परमानेंट चले गये हैं, ठीक हो जायेंगे यार।

दिलीप मालूम है, जब मैं पिछली बार छुट्टी गया था, तो अम्मा तो तभी मेरी शादी कर देना चाहती थी।

मगर लड़की ने मना कर दिया।
नहीं यार, उसके माँ–बाप नहीं चाहते थे अभी। चलो अच्छा ही हुआ।
हाँ अच्छा ही हुआ। अबकी बार मिलेगा तो इस आपरेशन का हीरो बन कर मिलना।
पिछली बार जगदलपुर गया था तो मिला था उससे।
शून्य में देखते भृगु को सामने कालिज की किताबें लिये वीणा दिखाई देती है।
और वो जो वीणा है न, बहुत सुंदर है।
वीणा नाम है उसका?
हाँ। वह बहुत सुंदर है।

इतनी देर शांति देखकर नक्सलियों का एक झुंड अपने कैम्प से निकल कर उन दोनों की तरफ बढ़ता है। दिलीप की नजर उन पर पड़ती है।

दिलीप अपने बाएँ हाथ से अपनी रायफल सम्भालता है। भृगु भी अपनी रायफल तान लेता है।

दोनो सम्भल कर आगे बढ़ते हुए नक्सलियो को देखते हैं।

आगे बढ़ रहे नक्सली पहले जमीन पर पड़ी अपने दो साथियों की लाशों के पास रूक कर उनका मुआइना करते हैं।

और यह यकीन हो जाने पर कि वो मर चुके हैं, सावधानी के साथ भृगु और दिलीप की ओर बढ़ने लगते हैं।

दिलीप और भृगु दोनों अपनी रायफल उठा कर उस ओर फायर कर देते हैं।

इस अचानक हमले से घबरा कर नक्सली फौरन अगल–बगल की चट्टानों के पीछे आड़ पकड़ लेते हैं और लगातार भृगु और दिलीप की ओर फायर करते हैं।

कुछ देर बाद।

बेहद तकलीफ में सरक कर दिलीप के पास जाता है और उसके पाउच से एक मैगजीन निकाल कर उसकी ए. के. 47 की मैगजीन बदल देता है और उसके बाद पलट कर गहरी–गहरी सांसे लेने लगता है।

क्या हुआ ? बहुत दर्द हो रहा है क्या ?
नहीं, बस अम्मा याद आ रही है।
अम्मा ?
बहुत गुस्सा करती है मेरी अम्मा, मगर मैं जानता हूँ, उसका सारा गुस्सा दिखावा है, अंदर से वह बहुत भोली है।
जानता हूँ, सारी माएँ एक जैसी ही होती हैं।
भृगु विचारों में खो जाता है।
क्या हुआ ?
माँ!
माँ!
मुझे माँ दिखाई दे रही है दिलीप, वो मुझे बुला रही है।
सुशीला रसोई में चूल्हे के पास बैठी है। भृगु उसके सामने कमरे मे कपड़े बदल रहा है।
अरे मिक्खू हम एक बात तो भूल ही गये!

क्या हुआ अम्मा, क्या भूल गई?
अरे आज एक चिट्ठी आई थी तेरे नाम की, वहां, आले पर रखी है। सरकारी चिट्ठी है डाकिया बता रहा था।
भिक्खू आले से चिट्ठी उठा कर खोल कर पढ़ता है। उसके चेहरे पर खुशी छा जाती है।
अरे क्या हुआ, किसकी चिट्ठी है?
अरे....... अम्मा हम वो जगदलपुर गये थे न, सी.आर.पी में भर्ती का टेस्ट देने।
हाँ...हाँ...तो ?
अम्मा वहीं से चिट्ठी आई है। हमारा सिलेक्शन हो गया है सी.आर.पी. में।
सच, हे राम जी, बिटवा पर ऐसे ही कृपा बनाये रखिये।

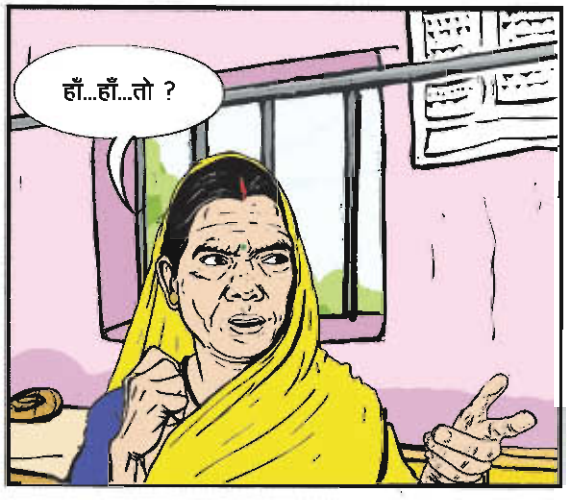

अम्मा मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि मैं कितना खुश हूँ। बापू की तरह वर्दी पहनने का कितना शौक है मुझे। अम्मा सी.आर.पी. की वर्दी पहनूंगा मैं। है पूरे सिढ़ौली में कोई सी.आर.पी. में ? अम्मा हमारे गांव सिढ़ौली में तो क्या, पूरे गरियाबंद जिले मे नहीं होगा कोई सी.आर.पी. में।

हाँ हाँ ज्यादा बड़–बड़ ना कर, कभी–कभी अपनी नजर भी लग जाती है खुद को।

भृगु आगे बढ़ कर सुशीला के गले लग जाता है।

मैं बहुत खुश हूँ अम्मा, बहुत खुश हूँ।

सुशीला उससे छिपा कर अपने आंसू पोंछ लेती है।

इस घटना को याद कर भृगु की आँख से आँसू टपक जाता है। जिसे वो चुपके से पोंछने की कोशिश करता है।

अम्मा के हाथ के बनाये वड़े याद आ गये। मेरी अम्मा उड़द की दाल के वड़े बहुत अच्छे बनाती है।

कभी हमें खिलाएगा तो पता चलेगा न। हमारे यहां तो बस राजमा चावल ही चलते हैं।

तभी दबे पांव आड़ के पीछे से निकल कर नक्सली फिर अपने साथियों की लाशों की तरफ बढ़ते हैं, वो उन्हें घसीट कर अपने साथ ले जाना चाहते हैं।

देख रहा है दिलीप, गीदड़ फिर निकल आये हैं लाशें उठाने के लिए।
थोड़ा नजदीक आने दे।
अबकी कितने टपकायेगा दिलीप ?
तू बोल ?
देखते हैं, वो बीच वाला मेरा है ... फायर।
दोनों फिर फायर करते हैं। नक्सली फिर छिप कर उन पर फायर करने लगते हैं।
धाँय...
धाँय...
धाँय
मगर कब तक बचेंगे।
मेरी मैगजीन फिर खाली हो गई भाई ।
ठहर, मैं बदलता हूँ।

भृगु फिर अपने दर्द पर काबू पाकर उसकी मैगजीन बदल देता है।

भृगु दिलीप का यू.बी.जी.एल. ले लेता है और दिलीप अपने एक हाथ से रायफल और भृगु यू.बी.जी.एल. से नक्सलियों की ओर ताबड़तोड़ फायर कर देते हैं।

धाँय...

धड़ाम

धाँय...

नक्सलियों के झुंड में भगदड़ मच जाती है।

धाँय...

कुछ देर के लिए शांति छा जाती है।

भृगु।

हो गये न शांत। अगली बार कोबरा पर हाथ डालने से पहले सौ बार सोचेंगे।

तू ठीक है न।

हां, मैं ठीक हूं। पर मेरी आँखे बंद हो रही हैं। मुझे नींद सी आ रही है।

भृगु आँखे बंद मत करना। तू कुछ बोलता रह।

क्या बोलूँ ?

कुछ भी, बस सोना मत।

यार अपना सी.आर.पी.एफ. गीत याद आ रहा है.....देश के हम हैं रक्षक, जान भी दे दें बेशक, देश की रक्षा में।

वीर जियाले हम हैं, शस्त्र संभाले हम हैं, देश की रक्षा में।

लगता है किसी ने हम दोनो के लिए ही लिखा है ये गाना।

देख अँधेरा होने लगा है, साहब पीछे पहुँच गये होंगे, बस मदद आती ही होगी।

तुझे क्या लगता है कि कितने नक्सली होंगे इस कैम्प में?
100 से 150 होने चाहिये।
यहां हम सिर्फ दो । और हमारे पास ज्यादा अम्युनिशन भी नहीं है।
इनके लिए हम दो ही काफी हैं। वैसे ज्यादा नक्सली इंगेज हैं उस तरफ टीम 10 और 12 के साथ।
और ये हमारे सामने, ये कितने होंगे।
ये भी 20–25 से तो कम नहीं हैं।
दो–चार को तो टपकाया भी होगा हमने।
दो तो हमारे सामने ही पड़े हैं, झाड़ियों के पीछे भी 8–10 तो लुढ़के ही होंगे।
तभी पीछे हलचल होती है।
दिलीप और भृगु पलट कर देखते हैं।
लगता है पीछे से कोई आ रहा है।
झाड़ियों के पीछे से उनके साथी सिपाही सुरेंद्र और धीरज आगे बढ़ते हैं।
सुरेंद्र आ गये तुम, साहब ठीक है न ?
हाँ, मगर काफी चोट है, तुम लोग ठीक हो ?
भृगु को ज्यादा चोट लगी है, धीरज तुम भृगु को देखो यार।
धीरज फौरन भृगु की तरफ बढ़ कर उसकी मदद करता है।
सुरेंद्र तेरे पास 2 इंच मोर्टार है न, फायर कर इससे, सामने की तरफ। वो दाहिने तरफ चट्टानों के पीछे हैं नक्सली । धीरज जा सुरेंद्र की मदद कर।
सुरेंद्र और धीरज दोनो नक्सलियों की तरफ मोर्टार फायर करते हैं।

कुछ देर बाद।

कोई हलचल नहीं है, लगता है मर गये सब।

अब चलो तुम दोनो यहां से, अँधेरा और गहरा हो गया तो यहां से निकलना मुश्किल हो जायेगा।

धीरज, तुम भृगु को ले जाओ, मैं और सुरेंद्र यहीं रुक कर दुश्मन पर नजर रखेंगे।

नहीं, एकदम नहीं; दिलीप हम साथ चलेंगे।

ज़िद मत कर भृगु तेरी हालत खराब है।

तो तेरी हालत कौन सी अच्छी है यार। देख साथ लड़ें हैं, साथ मरेंगे।

अरे तो मैं कौन सा परमानेंट यहीं रहने वाला हूँ, आ रहा हूँ ना, पीछे पीछे।

हाँ, बाकी लोग भी आ रहें हैं, जल्दी करो, यहां ज्यादा देर रूकना ठीक नहीं है।

जा ले जा इसे।

ये ठीक नहीं है दिलीप, सुरेंद्र इसे भी उठा यार।

ठीक है, मैं इसे भी ला रहा हूँ, तुम तो निकलो।

धीरज भृगु की रायफल अपने कंधे पर डालता है और फिर सुरेंद्र की मदद से भृगु को अपनी पीठ पर लाद लेता है।

सुरेंद्र ले आ इसे भी जल्दी से।

फिकर नहीं यार, अभी मिलते हैं न, थोड़ी देर में बेस कैम्प में।

धीरज भृगु को ले कर वहां से निकल जाता है।

ओ.सी. साहब भी अपनी पार्टी के साथ इसी तरफ आ रहें हैं। कम्युनिकेशन बिल्कुल टूट गया है। इसीलिए तुम लोगों को ढूंढने मे इतनी देर हुई। बस कुछ ही देर में बाकी लोग भी आते होंगे, फिर हम भी यहां से निकल चलेंगे।

तभी बाकी लोग भी वहां आ जाते हैं और दिलीप को कंधे पर उठा कर सावधानी से पीछे लौट जाते हैं।

अगले दिन सुबह बेस कैम्प पचरूखिया में काफी हलचल थी। घायलों की नदद के लिए हेलीकाप्टर आ गये थे।

नगर सुबह 4 बजे भृगु ने दम तोड़ दिया।

हेलीकाप्टर में चढ़ाये जाते समय दिलीप ने भृगु के शव को देखा तो भीगी आँखों से उसे सलाम करने के लिए अपना हाथ उठा दिया...

बेस कैम्प में खड़े उप कमांडेंट टी. के. लाल सहित सभी ने भृगु को भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित की।

इस आपरेशन में सी.आर.पी.एफ. ने नक्सलियों के एक पूरे कैम्प को बरबाद कर दिया। नक्सलियों के कैंप से 5 क्विंटल दिरफोटक और 3 क्विंटल राशन के साथ 65 लैंड माईन बम, 9 पाईप बम और भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया गया। पीछे भागते नक्सली अपने 12 साथियों की लाशें और घायलों को अपने साथ ले गये। नक्सलियों की ओर से इस मुठभेड़ में शामिल था कुख्यात माओवादी संदीप जी और उसके लगभग 150 हथियारबंद साथी।

सहायक कमांडेंट नीरज कुमार, सब इंस्पेक्टर नरेंद्र सिंह, सिपाही दिलीप सिंह, सिपाही जोध सिंह और सिपाही अमित कुमार गंभीर रूप से घायल हुए।

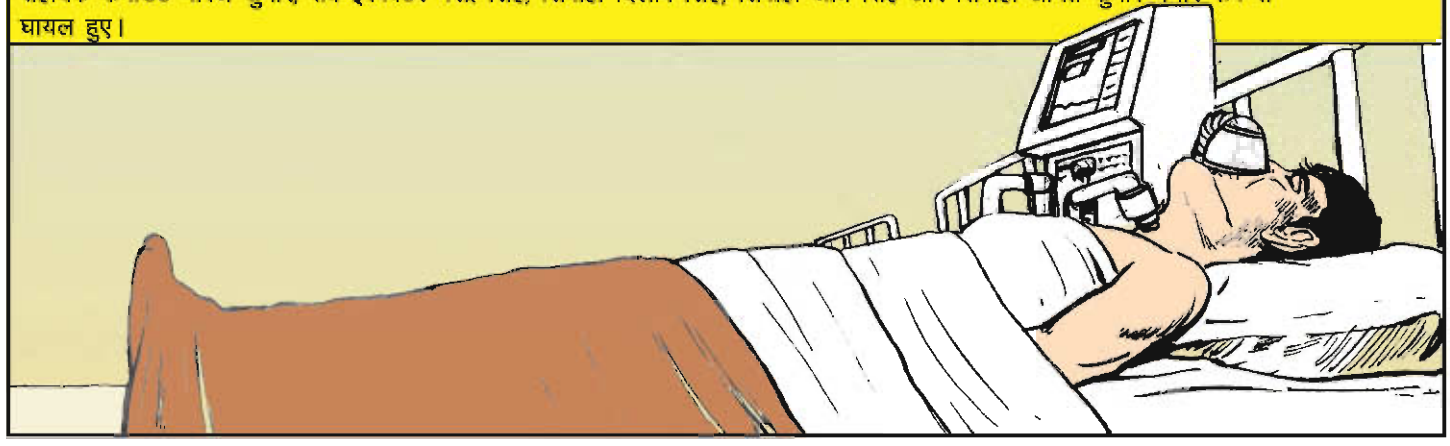

अदम्य वीरता, साहस, उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता और अपनी जान जोखिम में होते हुये भी अपने साथी की मदद करने के अनुकरणीय उदाहरण के लिए सिपाही भृगुनंदन चौधरी को मरणोपरांत **कीर्ति चक्र** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्राप्त किया शहीद भृगुनंदन चौधरी की माँ, श्रीमती सुशीला देवी चौधरी ने भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी के हाथों।

सी.आर.पी.एफ. ने वीर भृगुनंदन की शहादत के स्मृति–स्वरुप सनर्पित किया है 201 तथा 204 कोबरा बटालियन के करनपुर में नवनिर्मित प्रशासनिक परिसर को "शहीद भृगुनंदन चौधरी कोबरा परिसर" के रूप में जो शहीद भृगुनंदन की शहादत को जिंदा रखेगा और प्रेरणा देता रहेगा सी.आर.पी.एफ. की आने वाली पीढ़ियों को और यह समर्पण हुआ छत्तिसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमण सिंह के हाथों 29 अप्रैल, 2015 को।

द्वितीय कमान अधिकारी महेंद्र कुमार, सहायक कमांडेंट शिंकु शरण सिंह, सब इंस्पेक्टर मोहन सिंह बिष्ट, सिपाही अनित कुमार, सिपाही दिलीप सिंह, सिपाही नवनीश कुमार और सिपाही अजीत कुमार सिंह को वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। इस आपरेशन में शामिल 23 अधिकारियों और जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई। यह आपरेशन सिपाही भृगुनंदन चौधरी के साहस, वीरता और मित्र भाव के लिए हमेशा याद किया जायेगा। भृगुनंदन मरा नहीं, वह अमर हो गया है, हमेशा–हमेशा के लिए उन किस्से कहानियों में जो आने वाली पीढ़ियों को सुनाई जाती रहेंगी, बहादुरी और हिम्मत की एक मिसाल के रूप में। भृगुनंदन मरते नहीं, वह जीवित रहते हैं, नौजवानों को प्रेरित करने के लिए उन प्रतिमाओं में जो स्थापित की जाती हैं, उनके गाँव मुहल्लों के बीच, बाजार में।

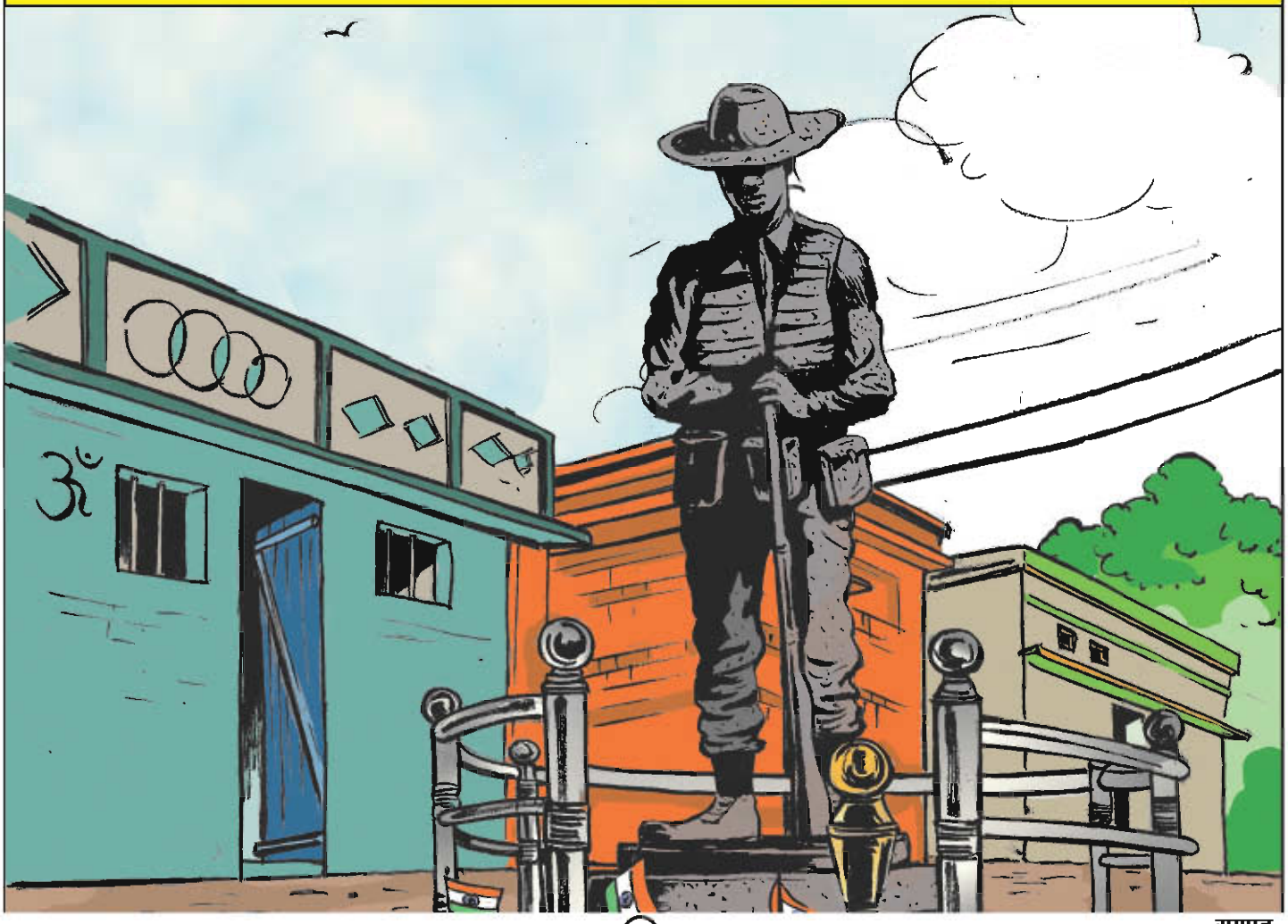



समाप्त

08 सितंबर, 2012 को बिहार के गया और औरंगाबाद जिले के चकरबंधा जंगल में नक्सलियों के एक विशाल कैम्प को सी.आर.पी.एफ की टुकड़ियों ने एक भीषण मुठभेड़ के बाद ध्वस्त कर दिया। इस आपरेशन में 205 कोबरा, 203 कोबरा, 159 बटालियन, 47 बटालियन, 215 बटालियन और 153 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियाँ शामिल थीं। कई वरिष्ठ नक्सली नेताओं सहित कैम्प में 100 से 150 नक्सलियों से आबाद इस कैम्प को तबाह कर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जांबाजों ने 5 क्विंटल विस्फोटक और 3 क्विंटल राशन के साथ 65 लैंड़ माईन बम, 9 पाईप बम और भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया। लगभग 4 घंटे तक चली इस मुठभेड़ में 12 नक्सलियों के मारे जाने और कई के घायल होने की खबर है, जिन्हें नक्सली अपने कंधो पर लाद कर भाग खड़े हुए।

इस आपरेशन में सिपाही भृगुनंदन चौधरी वीरगति को प्राप्त हुए तथा सहायक कमांडेंट नीरज कुमार, सब इंस्पेक्टर नरेंद्र सिंह, सिपाही दिलीप सिंह, सिपाही जोष सिंह और सिपाही अमित कुमार गंभीर रूप से घायल हुए।

सिपाही भृगुनंदन चौधरी को त्याग और बलिदान के एक अनुकरणीय उदाहरण के लिये मरणोपरांत कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्राप्त किया शहीद भृगुनंदन की माँ श्रीमती सुशीला देवी ने भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी के हाथों ।

# सम्मान सूची

अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटी की कर्तव्य परायणता के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा निम्न कार्मिकों को सम्मानित किया गया।

## कीर्ति चक्र

शहीद भृगुनंदन चौधरी

## वीरता के पुलिस पदक

महेंद्र कुमार
द्वितीय कमान अधिकारी

शिंकु शरण सिंह
सहायक कमांडेंट

मोहन सिंह बिष्ट
सब इंस्पेक्टर

सिपाही अमित कुमार

सिपाही अजीत कुमार सिंह

सिपाही नवनीश कुमार

सिपाही दिलीप सिंह

इसके अतिरिक्त इस आपरेशन में शामिल 23 अधिकारियों और जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया।

# सरदार पोस्ट
## एक शौर्य गाथा

9 अप्रैल, 1965 को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता, साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गयी, जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी बिग्रेड को ना केवल धूल चटा दी, बल्कि पराजित कर उसे पीछे लौटने को मजबूर कर दिया । यह पहला मौका था जब एक छोटी सी पुलिस टुकड़ी ने एक पूरी सेना का मुकाबला कर उसे पराजित किया हो । दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज यह शौर्य गाथा, अब कॉमिक प्रारूप में उपलब्ध । पढ़िये और जानिये अपने वीर सेनानियों के हैरतअंगेज वीरता के कारनामों को ।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की कहानी वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है । यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गवां देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा । यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था । उस स्थिति में भी उसने ना केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा और स्वयं अंतिम सांस तक अपने साथी सिपाही की मदद की । देशभक्ति, वीरता, साहस और मित्र भाव की एक अनूठी मिसाल बन गये सिपाही भृगुनंदन चौधरी । सिपाही भृगुनंदन चौधरी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम सदस्य हैं जिन्हे अद्वितीय वीरता के लिए यह सम्मान मरणोपरांत प्राप्त हुआ ।

देश के नक्सल हिंसा से प्रभावित इलाकों में काम कर रहे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सदस्यों की बहादुरी एवं स्थितियों का चित्रण प्रस्तुत करती एक सत्य घटना ।